❁ 20 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] बाप तो कोई तकलीफ नहीं देते हैं। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, बच्चों को सम्भालो, सिर्फ बाप को याद करो। गुरू गोसाई सबको छोड़ो। मैं तो सब गुरूओं से बड़ा हूँ ना। वह सब मेरी रचना हैं। सिवाए मेरे और कोई को पतित-पावन नहीं कहेंगे।

2] अभी बाप ने समजाया है 1250 वर्ष का हर युग होता है। स्वस्तिका में पूरे 4 भाग होते दिखाते हैं। ज़रा भी फर्क नहीं होता। विवेक भी कहता है एक्यूरेट हिसाब होना चाहिए। पुरी में भी चावल का हाण्डा चढ़ाते हैं, तो पूरे 4 हिस्से आपेही हो जाते हैं– ऐसी युक्ति बनाई हुई है। वहाँ चावल बहुत खाते हैं। जगन्नाथ कहो वा श्रीनाथ कहो बात एक ही है। दोनों ही काले दिखाते हैं। श्रीनाथ के मन्दिर में घी के भण्डार होते हैं। सब घी की तली हुई अच्छी-अच्छी चीज़ें मिलती हैं। बाहर में दुकान लग जाते हैं। कितना भोग लगता होगा। सब यात्री जाकर दुकानदारों से लेते हैं। जगन्नाथ में फिर चावल ही चावल होते हैं। वह जगत नाथ, व श्रीनाथ। सुखधाम और दु:खधाम को दिखाते हैं। श्रीनाथ सुखधाम का था, वह दु:खधाम का। काले तो इस समय बन गये हैं- काम चिता पर चढ़कर। जगन्नाथ को सिर्फ चावल का भोग लगाते हैं। इनको गरीब, उनको साहूकार दिखाते हैं। ज्ञान का सागर एक बाप ही है। भक्ति को कहा जाता है अज्ञान, उनसे कुछ मिलता नहीं। वहाँ सिर्फ गुरू लोगों की आमदनी बहुत होती, होशियार होगा, उनसे कोई सीखेगा तो वह कहेंगे यह हमारा गुरू है। उसने हमको यह सिखाया है। वह सब जिस्मानी हैं, जन्म लेने वाले।

3] इस समय तो दुनिया में सभी पाप करते रहते हैं, कर्मभोग है ना। अगले जन्म में पाप किया है, 63 जन्म का हिसाब-किताब है। थोड़ी-थोड़ी कला कम होती जाती है। जैसे चन्द्रमा की कलायें कम होती हैं ना। यह फिर है बेहद का दिन-रात। अभी सारी दुनिया पर, उसमें भी खास भारत पर राहू की दशा बैठी हुई है। राहू का ग्रहण लगा हुआ है। अभी तुम बच्चे श्याम से सुन्दर बन रहे हो इसलिए कृष्ण को भी श्याम-सुन्दर कहते हैं। सचमुच काला बना देते हैं। काम चिता पर चढ़े हैं तो निशानी दिखा दी है। परन्तु मनुष्यों की कुछ बुद्धि चलती नहीं। एक सांवरा, दूसरा गोरा कर देते हैं। अभी तुम गोरा बनने का पुरूषार्थ कर रहे हो। सतोप्रधान बनने का पुरूषार्थ करेंगे तब तो बनेंगे ना, इसमें तकलीफ की बात नहीं।

4] स्नेह की निशानी है वो स्नेही की कमी देख नहीं सकते। स्नेही की गलती अपनी गलती समझेंगे। बाप जब बच्चों की कोई बात सुनते हैं तो समझते हैं यह मेरी बात है। बाप बच्चों को अपने समान सम्पन्न और सम्पर्ण देखना चाहते हैं। इस स्नेह के रिटर्न में स्वयं को टर्न कर लो। भक्त तो सिर उतारकर रखने के लिए तैयार हैं आप शरीर का सिर नहीं उतारो लेकिन रावण का सिर उतार दो।

✺ योग-

1] मीठे बच्चे– दु:ख हर्ता सुख कर्ता बाप को याद करो तो तुम्हारे सब दु:ख दूर हो जायेंगे, अन्त मति सो गति हो जायेगी।

2] चलते-फिरते याद में रहने का डायरेक्शन– a) याद से ही जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझ उतरेगा।, b) याद से ही आत्मा सतोप्रधान बनेगी।, c) अभी से याद में रहने का अभ्यास होगा तो अन्त समय में एक बाप की याद में रह सकेंगे। अन्त के लिए ही गायन है- अन्तकाल जो स्त्री समरे....., d) बाप को याद करने से 21 जन्मों का सुख सामने आ जाता है। बाप जैसी मीठी चीज़ दुनिया में कोई नहीं, इसलिए बाप का डायरेक्शन है– बच्चे, चलते-फिरते मुझे ही याद करो।

...2

3] बाप कहते हैं पतित-पावन मैं हूँ, हे आत्मायें मामेकम् याद करो। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझकर मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायें।

✺ धारणा-

1] जितना याद करते रहेंगे उतना सतोप्रधान बनते जायेंगे। पुरूषार्थ करके अवस्था ऐसी जमानी है जो तुमको पिछाड़ी में सिवाए एक बाप के कुछ याद न आये।

2] इन आंखों से कुछ भी ईविल न देखो। सिविल आंखों से देखो, क्रिमिनल से नहीं। इस पुरानी दुनिया को न देखो। यह तो खलास हो जानी है।

3] बाप कहते हैं काम महाशत्रु है इनसे तुम आदि, मध्य, अन्त दु:ख पाते हो। ज्ञान और भक्ति को भी अब तुमने समझा है। विनाश सामने खड़ा है, इसलिए अब जल्दी-जल्दी पुरूषार्थ करना है। नहीं तो पाप भस्म नहीं होंगे। बाप की याद से ही पाप कटेंगे। पतित-पावन एक बाप ही है। कल्प पहले जिन्होंने पुरूषार्थ किया है वह करके ही दिखायेंगे। ठण्डे मत बनो। सिवाए एक बाप के और कोई को याद न करो। सब दु:ख देने वाले हैं। जो सदा सुख देने वाला है, उनको याद रखो, इसमें गफलत नहीं करनी है। याद नहीं करेंगे तो पावन कैसे बनेंगे?

✺ सेवा-

1] ---